''परमेश्वर की योजना क्या है?''

I. परमेश्वर ने इब्राहीम पर कौन सी योजना प्रकट की थी?
   1. परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह इब्राहीम से एक बड़ी _____ बनाएगा। उत्पत्ति 12:1, 2
   2. पृथ्वी के सारे कुल उसके द्वारा _____ पाएंगे। उत्पत्ति 12:3
   3. आशीष उस वंश, अर्थात _____ के द्वारा आई। उत्पत्ति 22:18; गला. 3:16

II. वह बड़ी जाति कैसे बनी?
   1. परमेश्वर ने याकूब से जिसका नाम बदलकर _____ रखा गया था (उत्पत्ति 32:28), _____ देश में एक बड़ी जाति बनाने की प्रतिज्ञा की थी। उत्पत्ति 46:2, 3
   2. मिसर में गए _____ लोगों से (निर्ग. 1:5) इस्राएल के वहां से निकलने के समय _____ युद्ध की आयु वाले पुरुषों (गिनती 1:45, 46) के अलावा _____ लेवीय पुरुष (गिनती 3:39) थे।

III. इस्राएल जाति के पास व्यवस्था कौन सी थी?
   1. व्यवस्था उन्हें लोगों की एक _____ के रूप में (व्यवस्था. 4:2, 5) _____. की आज्ञा (व्यवस्था. 4:7, 8) से दी गई थी।
   2. इस व्यवस्था को उस _____ में पूरा किया जाना आवश्यक था जिस पर उन्होंने अधिकार करना था। व्यवस्था. 4:5
   3. परमेश्वर ने उन्हें _____ अर्थात दस आज्ञाएं दी थीं। व्यवस्था. 4:13
   4. यदि वे वाचा को पूरा करते, तो उन्होंने _____ रहना था, उनका _____ होना था और परमेश्वर ने उन्हें उस _____ में बहुत दिन रखना था। व्यवस्था. 5:33
   5. यदि वे वाचा को तोड़ते (लैव्य. 26:14, 15) तो परमेश्वर ने उन्हें जाति-जाति के बीच _____ कर देना था और उनका देश सूना हो जाना था। लैव्य. 26:33

IV. पहली वाचा में क्या समस्या थी? इब्रा. 8:6, 7
   1. व्यवस्था के अधीन रहने वाले _____के अधीन थे। गलतियों 3:10
   2. यह _____ और _____ की सेवकाई थी। 2 कुरिन्थियों 3:6, 7, 9
   3. इसे तोड़ने वाला बिना _____ मार डाला जाता था। इब्रा. 10:28

V. अनुग्रह उपलब्ध कराने के लिए परमेश्वर ने क्या किया?

1. परमेश्वर ने एक _____ वाचा की प्रतिज्ञा की, जो पहली की तरह _____ थी। यिर्म. 31:31, 32
2. दूसरी वाचा में परमेश्वर ने कहा कि उसने _____ होना था (इब्रा. 8:12)।
3. यीशु _____ वाचा के समय के अपराधों के कारण मरा। इब्रा. 9:15
4. यीशु की _____ के समय नई वाचा प्रभावी हो गई। इब्रा. 9:16, 17
5. उसने दूसरे को _____ करने के लिए पहले को _____ दिया। इब्रा. 10:9
6. दूसरी वाचा पहली से उत्तम है और इसमें _____ प्रतिज्ञाएं हैं। इब्रा. 8:6; 1 पत. 1:3, 4

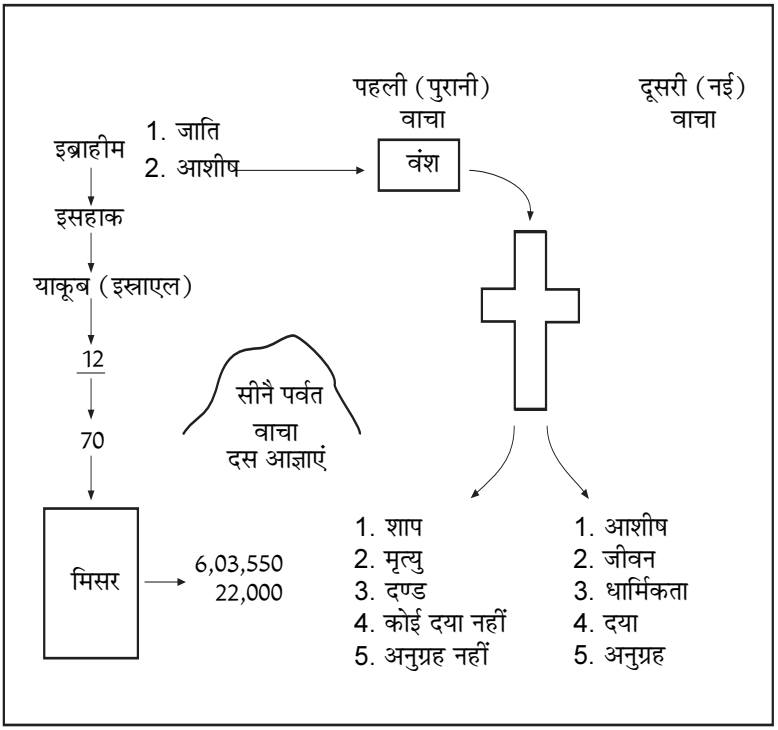

अध्ययन शीट प्रस्तुत करना:

''परमेश्वर की योजना ज़्या है?''

''परमेश्वर की योजना ज़्या है ?'' का इस्तेमाल आरज़्भिक अध्ययन शीट के रूप में या तर्कसंगत रूप में इसका इस्तेमाल ''पाप एवं मृत्यु कहां से आए ?'' अध्ययन शीट के बाद किया जा सकता है।

उद्देश्य

''परमेश्वर की योजना'' शीट का उद्देश्य यह दिखाना है कि आरज़्भ से ही परमेश्वर की मनुष्य के लिए एक योजना थी। सिखाने वाला इस पाठ में दिखा सकता है कि पुराने नियम से लोगों की एक जाति अर्थात इस्राएल जाति के लिए अगुआई तथा नियम मिले और नया नियम मसीही लोगों की अगुआई के लिए है।

संक्षेप में पाठ

परमेश्वर ने इब्राहीम पर एक बड़ी जाति बनाने और उसके वंश अर्थात मसीह के द्वारा सब जातियों को आशीष देने की योजना प्रकट की। मिसर में यह जाति काफी बढ़ गई थी। परमेश्वर ने उन्हें सीनै पर्वत पर मूसा के द्वारा एक व्यवस्था दी थी। इस व्यवस्था से उन पर *आशीष* नहीं पहुंची, बल्कि इससे वे *श्राप* के अधीन आ गए थे। आशीष परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार यीशु के द्वारा ही पहुंची।

परिचय

[सिखाने वाले ने यदि पहले ''पाप व मृत्यु कहां से आए ?'' अध्ययन शीट से पढ़ाया है, तो उसे चाहिए कि वह उस अध्ययन शीट को संक्षेप में फिर से दोहरा दे।] पाप संसार में आदम और हव्वा के द्वारा ही आया था। परमेश्वर पहले से ही जानता था कि ऐसा होगा, अत: उसने पहले से ही एक योजना बना ली थी जिससे पाप की क्षमा हो सके। इस पाठ में परमेश्वर की योजना के विषय में बताया जाएगा।

I. योजना प्रकट की गई

1. परमेश्वर की योजना पर विचार करते हुए, हमें बाइबल के बिल्कुल शुरू से

प्रारम्भ करना चाहिए। परमेश्वर ने अब्राम को जिसका नाम बाद में बदलकर इब्राहीम रख दिया गया था, अपनी योजना बताई (उत्पत्ति 17:5; ''अब्राम'' का अर्थ है ''उच्च पिता'' और ''इब्राहीम'' का अर्थ है ''बहुतों का पिता।'')

परमेश्वर की प्रतिज्ञा के मुख्यत: *दो* पहलू थे। परमेश्वर ने अब्राम से अपना देश छोड़ देने पर *क्या* देने की प्रतिज्ञा की थी? [उत्पत्ति 12:1, 2 पढ़ें।] परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह अब्राम से एक बड़ी *क्या* बनाएगा? [रिक्त स्थान में ''जाति'' भर लें।]

2. परमेश्वर ने एक और बड़ी प्रतिज्ञा भी दी थी। यह प्रतिज्ञा *क्या* थी? [उत्पत्ति 12:3 पढ़ें।] अब्राम के द्वारा पृथ्वी के सब कुलों को *क्या* मिलना था? [रिक्त स्थान में ''आशीष'' भर लें।]

[अध्ययन शीट के *पिछली ओर* ''इब्राहीम'' लिख लें और फिर, 1. ''जाति'' और 2. ''आशीष'' लिखें। देखें पृष्ठ 116।]

3. यद्यपि आशीष इब्राहीम के द्वारा तो मिलनी थी परन्तु उस *ने नहीं देनी* थी। यह प्रतिज्ञा कैसे पूरी होनी थी? [उत्पत्ति 22:18 और गलतियों 3:16पढ़ें।] यह आशीष इब्राहीम के उस एक वंश [संतान] ने देनी थी। वह वंश *कौन* है? [रिक्त स्थान में ''मसीह'' भर लें।] यह आशीष केवल इस्राएल जाति के लिए ही नहीं थी बल्कि पृथ्वी के *सब* कुलों के लिए भी थी। [अध्ययन शीट के *पिछली ओर* ''आशीष'' से एक रेखा खींचते हुए कागज़ के केन्द्र तक ले जाएं, और ''वंश'' शब्द लिखें। फिर कागज के दाईं ओर एक रेखा खींचें, और एक क्रूस बनाएं। देखें पृष्ठ 116।]

इब्राहीम से की गई इन प्रतिज्ञाओं के आधार पर बाइबल को *दो* भागों में बांटा गया है। पुराना नियम मुख्यत: उस *जाति* के लिए है जो इब्राहीम से उत्पन्न हुई और नया नियम उस *आशीष* के बारे में बताता है जो यीशु मसीह के द्वारा पहुंची थी। उस *जाति* के बारे में जानने के लिए, हमें पुराना नियम पढ़ना होगा। उस *आशीष* के बारे में जानने के लिए नया नियम पढ़ना आवश्यक है।

II. उस जाति का बढ़ना

1. उत्पत्ति की पुस्तक के शेष भाग में उन घटनाओं का वर्णन है जिनसे वह बड़ी जाति बनी। उस बड़ी जाति के बनने पर याकूब ने प्रमुख व्यक्ति कहलाना था, इसलिए परमेश्वर ने उसका नाम बदल दिया था। [उत्पत्ति 32:28पढ़ें।] परमेश्वर ने याकूब का नाम बदलकर *क्या* रखा? [रिक्त स्थान में ''इस्राएल'' भर लें, जिसका अर्थ है ''परमेश्वर से युद्ध करने वाला।''] *इस्राएल की संतान* को याकूब के वंशज कहा जाता है। बाइबल पढ़ते समय इस बात का ध्यान रखें। इस्राएल जाति और इस्राएल की संतान याकूब के वंशजों को ही कहा जाता है। [*पिछली ओर* नीचे करके ''इब्राहीम'' और ''इसहाक'' लिखें और समझाएं कि यह इब्राहीम का पुत्र था। उसके नीचे ''याकूब (इस्राएल)'' लिखें और समझाएं कि यह इसहाक का पुत्र था। याकूब के नाम के नीचे ''12'' लिखें और बताएं कि याकूब के 12 पुत्र थे जिनसे इस्राएल के बारह गोत्र बने। देखें पृष्ठ 116।]

[अब सिखाने वाले को चाहिए कि वह बताए कि कैसे याकूब के पुत्रों ने अपने भाई यूसुफ को व्यापारियों को बेच दिया जो उसे मिसर ले गए थे। पोतिफर के घर काम करने और उसकी पत्नी द्वारा झूठा आरोप लगाने के बाद, यूसुफ को जेल में डाल दिया गया जहां उसने साकी और रसोइये (पिलाने वाले और खाना बनाने वाले) के स्वप्नों का अर्थ बताया। बाद में साकी ने फिरौन को जो एक स्वप्न के कारण परेशान था, बताया कि यूसुफ उसके स्वप्न का अर्थ बता सकता है। यूसुफ को फिरौन के स्वप्न का अर्थ बताने के कारण, आने वाले सात वर्षों के अकाल की तैयारी के लिए सात वर्ष के लिए भोजन इकट्ठा करने की ज़िम्मेदारी दे दी गई।

अकाल पड़ने पर याकूब ने यूसुफ के भाइयों को अनाज लाने के लिए मिसर भेजा। जब उसके भाई अनाज के लिए दूसरी बार मिसर आए, तो यूसुफ ने बता दिया कि वह उनका भाई है। उसने उन्हें उनके पिता को मिसर में लाने के लिए कहा। जब उन्होंने याकूब को मिसर आने के लिए कहा तो उसे यह निर्णय लेना था कि वह मिसर में जाए या नहीं। वह अभी इस पर विचार कर ही रहा था कि परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया।]

परमेश्वर ने याकूब से क्या कहा? [उत्पत्ति 46:2, 3 पढ़ें।] याकूब की संतान एक बड़ी जाति के रूप में *किस* देश में बढ़ेगी? [रिक्त स्थान में ''मिसर'' भर लें। *पिछली ओर* एक वर्ग बनाएं, और इसमें ''मिसर'' लिख लें। देखें पृष्ठ 116।]

2. याकूब अपने सारे पुत्रों और उनके बच्चों को अपने साथ मिसर ले गया। उसके साथ कितने लोग गए थे? [पढ़ें निर्गमन 1:5.] मिसर में याकूब के साथ आने वाले *कितने* लोग थे? [रिक्त स्थान में ''70'' भर लें।]

जल्दी ही उनकी संख्या बढ़ गई। [निर्ग. 1:7-9 पढ़ें।] मूसा की अगुआई में उनके मिसर से निकलने के बाद, मूसा और हारून को उनकी गणना करने की आज्ञा दी गई। गणना में किन-किन लोगों को शामिल किया जाना था? [गिन. 1:1-3 पढ़ें।] उनकी सेना में कितने पुरुष थे? [गिन. 1:45, 46 पढ़ें।] *कितने लोग* थे सेना में? [रिक्त स्थान में ''6,03,550'' भरें।] इस संख्या में कौन लोग शामिल नहीं थे और क्यों नहीं शामिल किए गए थे? [गिन. 1:47-50 पढ़ें।] लेवियों को सेना में शामिल नहीं किया गया था क्योंकि उन पर इस्राएल जाति के धार्मिक मामलों को देखने की ज़िम्मेदारी थी।

लेवीय कौन थे और उनकी संख्या कितनी थी? [गिनती 3:39 पढ़ें।] [रिक्त स्थान में ''22,000'' भर लें। *पिछली ओर* मिसर से निकलने वाले ''6,03,550'' और ''22,000'' लिखें। देखें पृष्ठ 116।] इस्राएल के पास 6,03,550 लोगों की सेना और लेवी के गोत्र में 22,000 पुरुष थे। विभिन्न अनुमानों से पता चलता है कि इतनी बड़ी सेना और जाति के इतने याजकों के लिए तीस से पचास लाख लोग होने आवश्यक थे।

कनान देश में छोटी सी शुरुआत से, इस्राएल परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार एक बहुत बड़े समूह में फैल चुका था। [यदि आपके पास नज़्शा हो, तो आप इब्राहीम के फलस्तीन जाने तथा उसकी संतान के मिसर में जाने और फिर सीनै पर्वत तक जाने को अच्छी तरह से समझ सकते हैं।]

III. जाति के लिए व्यवस्था

1. इस्राएल (याकूब) की संतान के मिसर में आने से पहले, वे एक छोटा सा परिवार ही थे और उन्हें एक जाति के रूप में व्यवस्था की आवश्यकता नहीं थी। मिसर में रहते हुए, वे मिसर के नियमों के अनुसार रहने को विवश थे। परन्तु अब जबकि वे एक स्वतन्त्र जाति के रूप में विकसित हो चुके थे, तो उनके लिए एक राष्ट्रीय कानून आवश्यक था।

उन्हें व्यवस्था किसने दी? [व्यवस्था. 4:2, 5 पढ़ें।] मूसा ने उन्हें *किसकी* व्यवस्था दी [रिज़्त स्थान में ''यहोवा'' भर लें।] यह व्यवस्था सारे संसार के लिए नहीं, बल्कि उनके लिए ही थी। [व्यवस्था. 4:7, 8; भजन 147:19, 20 भी पढ़ें।] यह व्यवस्था उन्हें *ज़्या* मानकर दी गई थी? [रिज़्त स्थान में ''जाति'' भरें।] जाति के रूप में उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था दी, जो एक धार्मिक और नैतिक व्यवस्था भी थी।

2. यह व्यवस्था कहां पूरी की जानी थी? [व्यवस्था. 4:5 पढ़ें।] उन्होंने इसे *कहां* पूरा करना था? [रिज़्त स्थान में ''देश'' भर लें।] व्यवस्था की प्रकृति से संकेत मिलता है कि यह पृथ्वी के सब लोगों के लिए नहीं बल्कि इस्राएल में रहने वाले लोगों के लिए ही एक नियम था।

इस्राएल देश से हज़ारों मील दूर रहने वाले लोगों के लिए इस व्यवस्था से उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर ध्यान दें। सब पुरुषों को यरूशलेम में साल में तीन बार जाना होता था जिसे परमेश्वर ने चुना था (व्यवस्था. 16:16)। यह वह स्थान था जहां परमेश्वर को ढूंढ़कर उसे दशमांश और अपनी भेंटें चढ़ानी होती थी (व्यवस्था. 12:5-11; 14:22-25)। कानूनी मामलों का निर्णय यहीं होता था (व्यवस्था. 17:8, 9)। खूनी व्यज़्ति को भागकर इस्राएल के छह नगरों में से एक में जाना होता था (गिनती 35:6)। इस्राएल को यह व्यवस्था अपने देश में पूरी करनी थी।

3. उनकी व्यवस्था में इन विधियों और निर्णयों के अतिरिज़्त, एक और बात शामिल थी। इसमें ज़्या शामिल था? [व्यवस्था. 4:13, 14पढ़ें।] परमेश्वर ने उनसे *ज़्या* बांधा था? [रिज़्त स्थान में ''वाचा'' भर लें। शीट के *पिछली ओर* एक पहाड़ का रेखाचित्र बनाएं, इस पर ''सीनै पर्वत'' चिपका कर इसके नीचे ''वाचा'' और फिर ''दस आज्ञाएं'' लिखें। देखें पृष्ठ 116।]

वाचा किसे कहते हैं? वाचा एक औपचारिक समझौता, संधि या अनुबंध होता है। परमेश्वर का इस्राएल से एक समझौता अर्थात अनुबंध हुआ था। इस अनुबंध (करारनामे) में इस्राएल का दायित्व दस आज्ञाओं का पालन करना था।

4. इस्राएल द्वारा वाचा को पूरा करने अर्थात दस आज्ञाओं का पालन करने पर परमेश्वर ज़्या करने के लिए सहमत हुआ? [व्यवस्था. 5:33 पढ़ें।] दस आज्ञाएं देने के बाद उसने यही प्रतिज्ञा की थी। (व्यवस्था. 5:1-21)। यदि वे इसका पालन करते, तो उसने उनके लिए ज़्या करना था? उन्हें *ज़्या* होना था? [रिज़्त स्थान में ''जीवित,'' ''भला'' और ''देश'' भरें।] ध्यान दें कि परमेश्वर ने इस्राएल के लिए ज़्या प्रतिज्ञा की थी। उसने प्रतिज्ञा की कि उन्हें वह *भौतिक आशिषें* देगा।

5. उनके द्वारा वाचा को तोड़ने पर परमेश्वर ने उनके साथ ज़्या करना था। [लैव्य. 26:14, 15, 33 पढ़ें।] उनका देश उनसे छीन लिया जाना था, और *ज़्या* होना था? [रिज़्त स्थान में ''तितर-बितर'' भर लें।] आज यहूदी लोग तितर-बितर ज़्यों हो गए हैं। वे इसलिए तितर-बितर हो गए हैं ज़्योंकि उन्होंने परमेश्वर द्वारा उनके साथ किए समझौते को तोड़ दिया था। इसके एक भाग के रूप में, वे उन लोगों में जिनमें वे तितर-बितर हो गए हैं एक ''दृष्टांत'' भी हैं (व्यवस्था. 28:37)।

IV. समस्या

1. इस्राएलियों को दी गई परमेश्वर की व्यवस्था अच्छी थी, परन्तु उसमें एक समस्या थी जो जानबूझकर परमेश्वर ने उसमें डाली थी (इब्रा. 8:6, 7)। इसमें एक त्रुटि रहने दी गई थी।

व्यवस्था में ज़्या दोष था? जिन लोगों को यह दी गई थी इसने उनके साथ ज़्या किया था? [गला. 3:10 पढ़ें।] इसके अधीन रहने वाले *किसके* अधीन थे? [रिज़्त स्थान में ''शाप'' भर लें।] वे शाप के अधीन ज़्यों थे? वे शाप के अधीन इस बात में थे कि उनके लिए बिना कोई बहाना बनाए व्यवस्था की हर बात को पूरा करना आवश्यक था (गल. 3:10)। कोई उस पर पूरी तरह नहीं चल पाया।

2. इसलिए, इसे कैसा प्रबन्ध माना जा सकता है? [2 कुरिं. 3:6, 7, 9 पढ़ें।] यह *किस* प्रकार की सेवकाई थी? [रिज़्त स्थान में ''शज़्द'' और ''मृत्यु'' भर लें।] यह मृत्यु की सेवकाई थी ज़्योंकि इसका उल्लंघन करने वालों को आम तौर पर मृत्यु दण्ड ही दिया जाता था। व्यवस्था को तोड़ने वाले किसी भी व्यज़्ति के लिए क्षमा का कोई प्रावधान नहीं था (गिनती 15:27-31)।

3. आज्ञा न मानकर व्यवस्था को तोड़ने वाले व्यज़्ति के साथ ज़्या हुआ? [इब्रा. 10:28 पढ़ें।] उसे *ज़्या किए* बिना मार डाला गया था? [रिज़्त स्थान में ''दया किए'' भर लें।] [अध्ययन शीट के *पिछली ओर* लिखें (देखें पृष्ठ 116): ''1. शाप''; ''2. मृत्यु''; ''3. दोषी ठहराने वाली''; ''4. कोई दया नहीं''; और ''5. कोई अनुग्रह नहीं (गल. 5:4)।''] परमेश्वर ने इब्राहीम के *वंश* के द्वारा सब जातियों को *आशीष* देने की प्रतिज्ञा की थी, परन्तु इसके बजाय व्यवस्था से वे *शाप* के अधीन आ गए थे, अत: यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की योजना व्यवस्था द्वारा सब जातियों को *आशीष* देने की नहीं थी।

यदि व्यवस्था के अधीन रहने वाले आशीषित होने के बजाय शापित थे, तो व्यवस्था का उद्देश्य ज़्या था? अपराधों के कारण मसीह तक लाने के लिए व्यवस्था को एक शिक्षक बनाकर बाद में जोड़ा गया था (गल. 3:19, 24)।

हम में से कई लोग स्वयं को परमेश्वर के ग्रहण योग्य इसलिए मानते हैं ज़्योंकि हमें लगता है कि हम बहुत भले हैं। एक अर्थ में व्यवस्था मनुष्य की भलाई के लिए उसे यह दिखाने के लिए कि वह अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकता बल्कि उसे सहायता की आवश्यकता है, एक प्रयोग था।

इसकी तुलना ज़्लोरिडा के एक किसान को किसी व्यक्ति द्वारा यह समझाने के रूप में की जा सकती है कि वह कनाडा में संतरे नहीं उगा सकता। उसे संतरे का बाग लगाने के लिए कनाडा के सबसे गर्म भाग में दक्षिणी ढलान को चुनना होगा। समय से पहले कोहरा, बर्फ पड़ने और सफल न होने पर वह किसान मान गया कि कनाडा में संतरे नहीं उगाए जा सकते।

इसी प्रकार परमेश्वर ने इब्राहीम को जो विश्वासी था, चुना और उसके वंशजों को दुष्ट जातियों से अलग कर दिया, फिर उसे मानने के लिए एक संपूर्ण व्यवस्था दी (रोम. 7:12)। यदि कोई अपने कर्मों से धर्मी बन सकता, तो इस्राएल के लोगों को ऐसा करने का सबसे अच्छा अवसर था, परन्तु उन सबने पाप किया (रोम. 3:9, 10)। परमेश्वर ने हमेशा के लिए यह सिद्ध कर दिया कि मनुष्य स्वयं अपना उद्धार नहीं कर सकता, बल्कि उसके पापों की क्षमा के लिए उसके पुत्र का मरना आवश्यक था। व्यवस्था का उद्देश्य निर्णायक तौर पर हमें यह दिखाना था कि हमें एक उद्धारकर्ज़ा की आवश्यकता है जो हमारे अपराधों को ढांपने के लिए अपना अनुग्रह कर सकता है।

V. परमेश्वर की योजना

1. परमेश्वर ने इब्राहीम के वंश के द्वारा संसार को आशीष देने की योजना बनाई थी। व्यवस्था से परमेश्वर की योजना टलती नहीं है (गलतियों 3:17)। यदि व्यवस्था से आशीष मिल जाती, तो यीशु के मरने की आवश्यकता ही नहीं थी (गलतियों 2:21)। परमेश्वर ने व्यवस्था और वाचा से आशीष देने की योजना नहीं बनाई थी।

परमेश्वर ने ज़्या करने की योजना बनाई थी? [यिर्म. 31:31, 32 पढ़ें।] परमेश्वर ने *ज़्या* बांधने की प्रतिज्ञा की थी? ज़्या यह वाचा परमेश्वर द्वारा इस्राएल से बांधी गई उस वाचा के जैसी होनी थी? [रिक्त स्थान में ''नई'' और ''नहीं'' भर लें।]

2. नई वाचा से ज़्या मिलना था? [इब्रा. 8:12पढ़ें।] परमेश्वर ने *ज़्या* कहा कि वह नई वाचा में होगा? [रिक्त स्थान में ''दयावंत'' भर लें।]

3. पहली वाचा में दया नहीं थी, ज़्या इसका अर्थ यह हुआ कि उन पर दया नहीं हुई थी। इब्राहीम को दी गई प्रतिज्ञा से भी उन्हें आशीष मिल सकती थी, जो व्यवस्था पर *नहीं* बल्कि किस पर आधारित थी? [इब्रा. 9:15पढ़ें।] यीशु उन अपराधों के लिए भी मरा जो *किस* वाचा में हुए थे? [रिक्त स्थान में ''पहली'' भर लें।] यदि किसी को परमेश्वर के पास आना हो तो यह केवल यीशु के द्वारा ही हो सकता है (यूहन्ना 14:6)। परमेश्वर की योजना यही रही है। संसार के पाप *केवल* यीशु के लहू के द्वारा ही क्षमा किए जा सकते हैं। व्यवस्था में दया और क्षमा नहीं थी। इससे केवल इसके अधीन रहने वालों को शाप ही मिलता था।

4. *नई* वाचा कब लागू हुई? [इब्रा. 9:16, 17 पढ़ें।] यह *कब* प्रभावी हुई? [रिक्त स्थान पर ''मृत्यु'' भर लें।] वसीयत एक ऐसा दस्तावेज़ है जो करने वाले की मृत्यु होने पर ही प्रभावी होता है इससे पहले उसका कोई लाभ नहीं होता। यही बात यीशु मसीह के नये

नियम पर लागू होती है। यीशु की मृत्यु से ही यह नियम प्रभावी हुआ।

5. ज़्या पुरानी वाचा के स्थान पर नई वाचा आ गई है? [इब्रा. 10:9 पढ़ें।] उसने दूसरी को *ज़्या* करने के लिए पहली को *ज़्या* किया? [रिज़्त स्थानों में, ''नियुज़्त'' और ''उठा दिया'' भर लें।] यीशु ने अपनी मृत्यु के समय दूसरी वाचा को नियुज़्त करके पहली वाचा को उठा भी दिया था। [*पीछे* ''पहली (अर्थात पुरानी) वाचा'' और ''दूसरी (अर्थात नई) वाचा'' लिखें। देखें पृष्ठ 116।]

6. इनमें से अच्छी कौन सी और ज़्यों है? [इब्रा. 8:6 पढ़ें।] दूसरी वाचा की प्रतिज्ञाओं के साथ पहली वाचा की प्रतिज्ञाओं में ज़्या भिन्नता है? ये प्रतिज्ञाएं *ज़्या* हैं? [रिज़्त स्थान में, ''उज़्म'' भरें।] उन्हें पहली वाचा को मानने के लिए ज़्या प्रतिज्ञा दी गई? ज़्या उन्हें देश में खुशहाली की प्रतिज्ञा नहीं दी गई थी (व्यवस्था. 5:33)? हमें दी गई उज़्म प्रतिज्ञा ज़्या है? [1 पतरस 1:3, 4 पढ़ें।] ज़्या ''स्वर्ग'' की आशीष इस्राएल के देश में खुशहाली के साथ दीर्घायु की आशीष से अच्छी और उज़्म नहीं है?

नई वाचा में पुरानी वाचा से उज़्म लाभ कौन से हैं? [*पिछली ओर* लिखें कि पुरानी वाचा से जो मिला उससे आगे: ''1. आशीष (गला. 3:14)''; ''2. जीवन (गला. 3:21)''; ''3. धार्मिकता (गला. 2:21)''; ''4. दया (इब्रा. 8:12)''; और ''5. अनुग्रह (यूहन्ना 1:17)।'' देखें पृष्ठ 116।]

आप इन दो वाचाओं में से किसके अधीन रहेंगे? ज़्यों रहेंगे? नई वाचा के अधीन हमें अच्छे लाभ और अच्छी प्रतिज्ञाएं दी गई हैं। निश्चय ही हम उस पहली वाचा की ओर अर्थात पीछे को नहीं जाना चाहते।

[सिखाने वाला उन नैतिक सिद्धांतों को समझा सकते हैं जो अनन्तकालिक हैं, जैसे कि हम हत्या न करें, व्यभिचार न करें, झूठ न बोलें, आदि और नये नियम में उन्हें अनन्तकालिक नियमों से निकाला *नहीं* गया। नई वाचा में ये सिद्धांत *दिए गए* हैं, परन्तु इस वाचा में सज़्त को शामिल *नहीं* किया गया है। सज़्त का दिन इस्राएल को विश्राम के विशेष दिन अर्थात उनके लिए एक स्मरण दिवस के रूप में दिया गया था, जिसमें उन्हें कोई काम नहीं करना होता था बल्कि केवल विश्राम करके यह याद रखना होता था कि वे मिसर देश में गुलाम थे (व्यवस्था 5:15)। यह दिन सृष्टि की रचना के स्मरण के लिए समर्पित *नहीं* था। परमेश्वर ने इस्राएल को सातवां दिन विश्राम करने के लिए यह याद रखने के लिए दिया था कि उन्हें मिसर में विश्राम रहित दासता से छुड़ाया गया था ज़्योंकि उसने सातवें दिन विश्राम किया था (निर्ग. 20:11)। सप्ताह का पहला दिन, अर्थात सज़्त के बाद का दिन (मत्ती 28:1; मरकुस 16:1; लूका 24:1) ही वह दिन था जब मसीही लोग इकट्ठे होते थे (प्रेरितों 20:7) और आज भी होते हैं। सप्ताह का पहला दिन मसीही लोगों के लिए यीशु के पुनरुत्थान के आधार पर पाप और मृत्यु से छुटकारे को याद रखने के रूप में एक यादगारी दिन था। उनके लिए यह सज़्त अर्थात इस्राएल के विश्राम दिन की तरह *शारीरिक* विश्राम का नहीं बल्कि *आत्मिक* विश्राम का दिन है।]

इस पाठ में हमने परमेश्वर की योजना पर ध्यान दिया है और यह देखा कि लोगों की

एक जाति द्वारा उसने दिखाया कि मनुष्य जाति को उनके उद्धार के लिए एक व्यवस्था की नहीं, बल्कि एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है, और मनुष्यजाति के उद्धार की उसकी योजना क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा ही होनी थी।

निष्कर्ष

इस अध्ययन शीट में हमने पापों से हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना के प्रकाशन की समीक्षा की है। यही बाइबल की विषय-वस्तु है।

हमारे लिए इस पाठ को संक्षिप्त करने का अच्छा ढंग पाठ के प्रमुख प्रश्नों के उज़र देना है।

I. *परमेश्वर ने इब्राहीम पर कौन सी योजना प्रकट की थी ?* परमेश्वर ने इब्राहीम पर प्रकट किया था कि वह उससे एक बड़ी जाति (पुराने नियम की विषय-वस्तु) बनाएगा और उसके वंश अर्थात यीशु के द्वारा सब जातियों को आशीष देगा (नये नियम की विषय-वस्तु)।

II. *वह बड़ी जाति कैसे बनी ?* इब्राहीम, इसहाक और याकूब की संतान जो मिसर में जाने के समय गिनती में 70 थे, मूसा और हारून की अगुआई में मिसर छोड़कर जाने तक, उसकी संज़्या तीस से पचास लाख थी जिसमें 603550 सेना में और 22000 पुरुष लेवी के गोत्र अर्थात याजकीय गोत्र के थे, एक बड़ी जाति बन गए थे।

III. *इस्राएल जाति को ज़्या व्यवस्था मिली थी ?* परमेश्वर ने उन्हें सीनै पर्वत पर एक व्यवस्था दी थी जिसे उन्होंने इस्राएल देश में एक जाति के रूप में मानना था। वह वाचा (उनके साथ परमेश्वर का समझौता) उनकी व्यवस्था का ही एक भाग थी (रोमियों 13:8-10)। यदि वे परमेश्वर के साथ इस करारनामे (अनुबंध) में बने रहते, तो उन्हें उस देश में लज़्बी आयु के साथ-साथ खुशहाली भी मिलनी थी, परन्तु यदि वे इस वाचा को तोड़ते, तो उन्हें देश से निकालकर दूसरे देशों में तितर-बितर कर दिया जाना था।

IV. *पहली वाचा की ज़्या समस्या थी ?* जो लोग इसके आधीन थे उन्होंने इसका पालन पूरी तरह से नहीं किया था, इसलिए व्यवस्था ने उन पर शाप, दोष और पाप का दण्ड ला दिया। कारण यह था कि इसमें दया नहीं थी।

V. *परमेश्वर ने दया देने के लिए ज़्या किया था ?* परमेश्वर एक नई वाचा अर्थात एक नया समझौता लेकर आया जिसमें दया शामिल की गई थी। यीशु की मृत्यु द्वारा पहली वाचा के श्राप को उठा लिया गया, उसके स्थान पर एक नई वाचा देकर पहली वाचा को एक तरफ कर दिया गया। *पहली* के स्थान पर *दूसरी* अर्थात एक नई और उज़म वाचा लाई गई जो उज़म प्रतिज्ञाओं (देश में ज़ुशहाली के साथ लज़्बी आयु के बजाय स्वर्ग में अनन्त जीवन) पर बंधी थी।

आज हम पर नई वाचा की शर्तें लागू होती हैं। हम पहली वाचा की ओर वापस नहीं जाते, ज़्योंकि इसके अधीन रहने का यत्न करने वाले, व्यवस्था के श्राप के अधीन थे। इसके बजाय हमें *दूसरी* व्यवस्था के अनुसार रहना है ज़्योंकि इसके द्वारा हमें अनुग्रह, दया और स्वर्ग में अनन्त जीवन की आशा दी जाती है।

इस पाठ से हमें बहुत सी बातों को समझने में सहायता मिलती है: (1) मसीही लोग पुराने नियम की व्यवस्था को ज़्यों नहीं मानते; (2) मसीही लोग शनिवार अर्थात सब्त के दिन विश्राम ज़्यों नहीं करते; (3) मसीही बनने के ढंग के उदाहरण के लिए यीशु की मृत्यु के बाद के मन परिवर्तनों को ज़्यों मानना चाहिए; और (4) मसीही लोग मसीही जीवन जीना सीखने के लिए नये नियम का अध्ययन ज़्यों करते हैं।

[पाठ को संक्षेप में बताकर सिखाने वाला सीखने वाले से व्यवस्था के प्रति उसके व्यवहार के बारे में पूछ सकता है; ज़्या उसने व्यवस्था पढ़ी है और इसमें बताई गई सब बातों को मानने पर विचार करता था; और यह कि उसने यह पढ़ा है कि व्यवस्था में पापों की क्षमा के लिए ज़्या करना आवश्यक है और नई वाचा में ज़्या आवश्यक है।

फिर सिखाने वाला यह कहते हुए कि अगला अध्ययन पुराने और नये नियमों में क्षमा पर विचार करने के लिए होगा, अगले अध्ययन का प्रबन्ध करें।]

सुसमाचार प्रचार

'' 'मेरे पीछे चले आओ; मैं तुमको मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा' (मरकुस 1:17)। यीशु के इन शब्दों का क्या अर्थ था? यह निमन्त्रण उन लोगों को दिया गया था जो जीविका के लिए मछलियां पकड़ रहे थे। वे मछलियां पकड़ा करते थे; अब उन्होंने मनुष्यों को पकड़ना था! मरकुस 1:17 की सामानान्तर आयत लूका 5:10 में इस बात को और स्पष्ट बताया गया है: 'मत डर: अब से तू मनुष्यों को जीविता पकड़ा करेगा।' ''

'' 'पकड़ने' के लिए जिस शब्द का इस्तेमाल लूका ने किया है वह मूल यूनानी शब्द *zogreo* से लिया गया है, जिसका मूल अर्थ जीवित लेना या जीवन के लिए पकड़ना है।''

डिलोस माइल्स
मास्टर प्रिंसिपल्स ऑफ़ इवेंजलिज़्म

''इस वर्ष 97 और 98 लोग जिन तक (सुसमाचार लेकर) पहुंचा गया, का अंतर एक अमूल्य आत्मा है! 15 और 16 लोग जिन तक (सुसमाचार लेकर) पहुंचाया गया, का अंतर एक टूटा हुआ परिवार हो सकता है, जिसके पिता को मसीह और मसीही संगति, या किसी ऐसे युवक की आवश्यकता हो सकती है जिसकी सामर्थ आत्मिक अगुआई के लिए किसी काम नहीं आ रही।''

चार्ल्स लिविंगस्टोन
यूज़िंग द संडे स्कूल टु रीच पीपल

''मसीही लोगों के रूप में हमारी सबसे पहली सेवा दूसरे की बात की ओर ध्यान देना है।''

डेयट्रिच बॉनहोफर
लाइफ़ टुगेदर

''सुसमाचार प्रचार *किसी वस्तु* द्वारा नहीं बल्कि *किसी व्यक्ति* द्वारा किया जाने वाला काम है। ... सुसमाचार में किसी वस्तु की नहीं बल्कि किसी व्यक्ति की चिंता की जाती है। परमेश्वर के प्रेम की अभिव्यक्ति होने के कारण यह कभी भी कम महत्व की शिक्षा या मैकेनिकल कार्यक्रम नहीं हो सकता, क्योंकि परमेश्वर एक व्यक्ति है। इस संदेश को आगे पहुंचाने के लिए कुछ कल्पना आवश्यक है, परन्तु यह निमन्त्रण देने के लिए बढ़ने वाले हाथ मांस और लहू के ही हैं।''

रॉबर्ट कोलमैन
दे मीट द मास्टर